समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 7

हिंदी (पल्लव)

अध्याय - 11

कागज की कहानी

भाग - 1

मिताली कुमारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



बच्चो ! कागज देखने में कितना सुंदर और आकर्षक लगता है! सफेद कागज पर हमारी लिखावट भी उतनी ही सुंदर बनती है। विभिन्न रंगों के कागजों का विविध प्रयोग होता है। सफेद कागज अक्सर लिखने अथवा छपाई के काम आता है। इससे पैकिंग का कार्य भी लिया जाता है। हम जिधर भी दृष्टि डालते हैं, उधर कागज के उपयोग दिखाई देते हैं। आज कागज हमारी जीवन-चर्या का महत्वपूर्ण अंग बन गया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

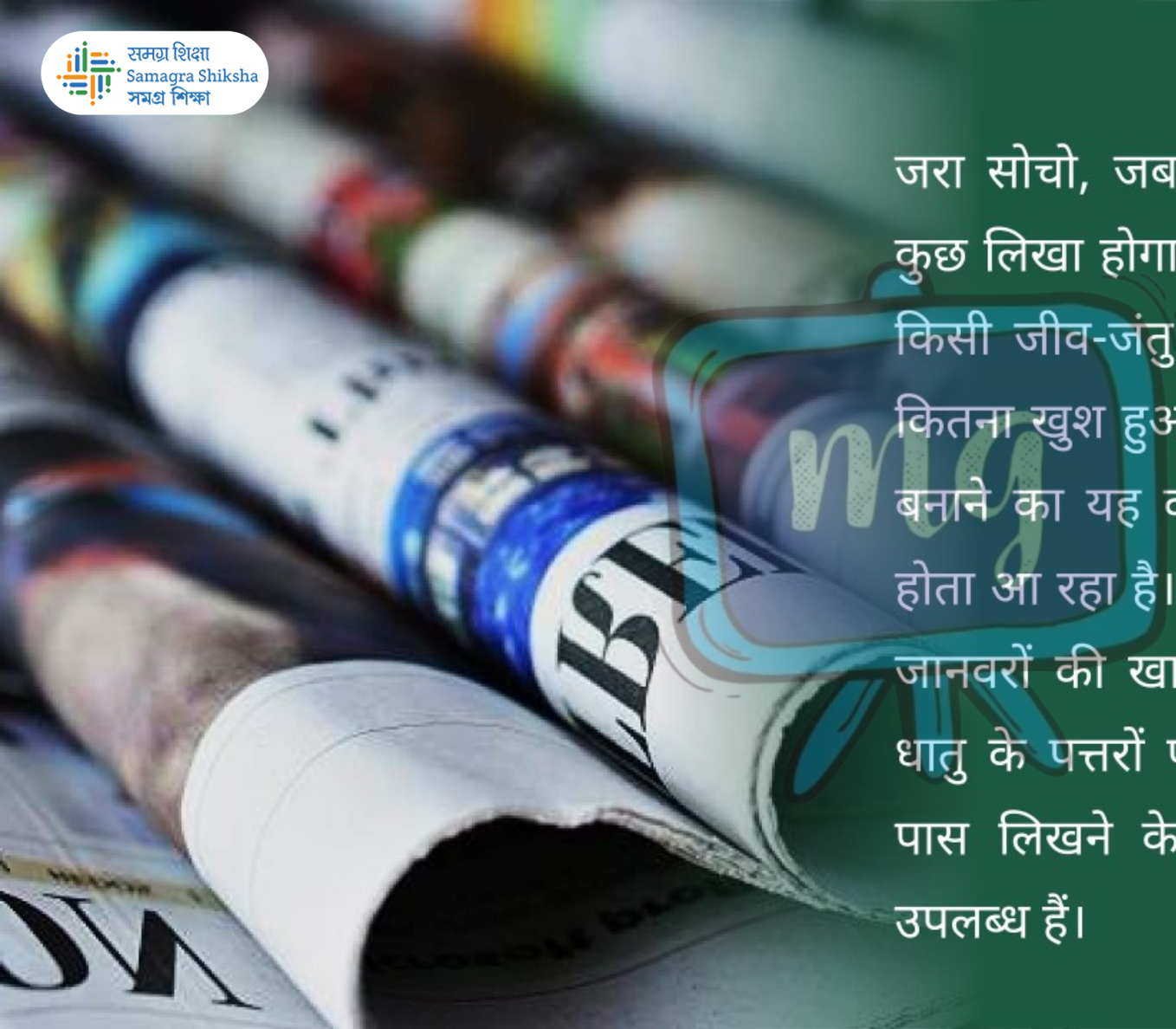

जरा सोचो, जब मनुष्य ने पहली बार कागज पर कुछ लिखा होगा ! उसने किसी वस्तु, फल-फूल या किसी जीव-जंतु का चित्र बनाया होगा ! तब वह कितना खुश हुआ होगा ! परंतु लिखने अथवा चित्र बनाने का यह काम कागज बनने से पहले से ही होता आ रहा है। तब मनुष्य पेड़ों के छाल-पत्तों पर, जानवरों की खाल पर, मिट्टी की पट्टियों पर तथा धातु के पत्तरों पर लिखता था। परंतु आज हमारे पास लिखने के लिए बढ़िया से बढ़िया कागज उपलब्ध हैं।



पढ़ने के लिए अनगिनत पुस्तकें हैं। कागज के रूप में सभ्यता का भरपूर विकास हो चुका है। लेकिन यह कागज कैसे बना ? कहाँ से आया? इसे किसने बनाया इसके पीछे एक बड़ी ही रोचक कहानी है। साइलुन नामक एक चीनी व्यक्ति को कागज का जन्मदाता माना जाता है। हालांकि मिस्र देश में 'पेपिरस' नामक एक प्रकार के सरकंडे से कागज बनाने का प्रयास हो चुका था। इसी कारण अंग्रेजी भाषा में कागज के लिए 'पेपर' शब्द का प्रयोग चल निकला।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



पेड़-पौधों के बारे में साइलुन हमेशा नई-नई बातों का पता लगाता रहता था। धीरे-धीरे उसका नाम चारों ओर फैलने लगा। चीन के राजा को साइलुन के बारे में जब पता चला तो उसने साइलुन को अपने दरबार में बुलाकर कहा- “तुममें बड़ी प्रतिभा है। हम तुम्हारी खोजों से बहुत खुश हैं। परंतु तुम किसी ऐसी वस्तु की खोज करो जिससे संसार में तुम्हारा नाम हो जाए और आनेवाली पीढ़ियाँ भी उस चीज को देखकर तुम्हें याद करें।"

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



साइलुन उसी समय से इस खोज में लग गया। उसने पेड़ के एक ऐसे गूदे का पता लगाया जिसपर किसी ब्रूश या कलम से स्थायी निशान बनाए जा सकते थे। उसने शहतूत के पेड़ को बहुत देर तक छीला। जब उसके भीतर से बारीक रेशे निकल आए तो साइलुन ने उन रेशों को पानी मिलाकर खूब पीसा। पीसते-पीसते जब उसकी लुगदी-सी बन गई तो उसे सूखने के लिए धूप में रख दिया। लुगदी सूखकर एक कठोर परत बन गई। बाद में साइलुन ने उस परत को लकड़ी के पट्टे पर रखकर समतल कर दिया। इस तरह कागज का जन्म हुआ।

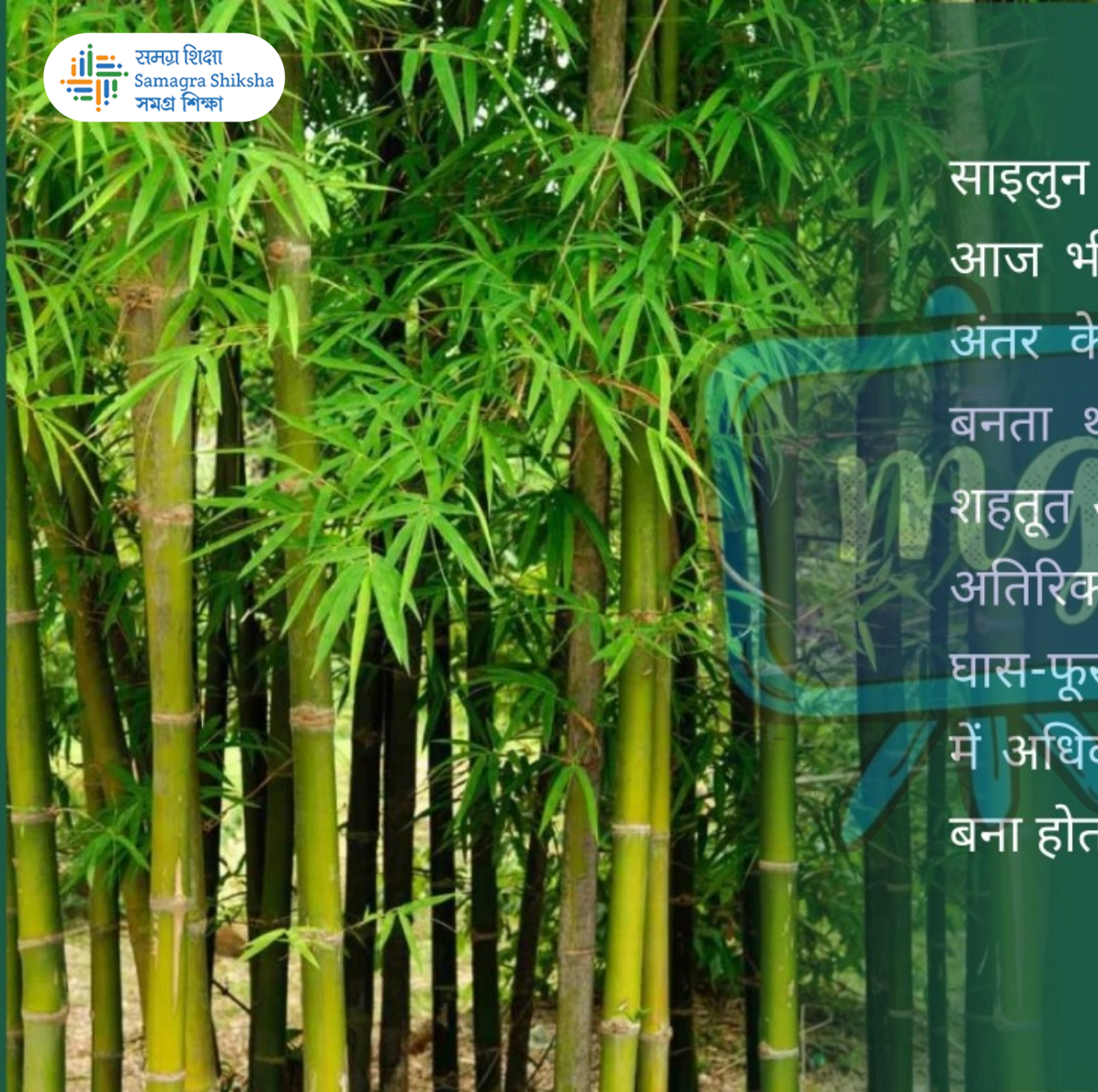

साइलुन ने जिस तरीके से कागज तैयार किया था- आज भी उसी तरीके से कागज बनाया जाता है। अंतर केवल इतना है कि पहले हाथ से कागज बनता था, आज यह काम मशीनों से होता है। शहतूत और बाँस से कागज बनाए जाते हैं। उसके अतिरिक्त खाद, सड़ी हुई लकड़ी, भूसी तथा अन्य घास-फूस से भी कागज बनते हैं। लेकिन इन्हें बनाने में अधिक खर्च आता है। प्रत्येक पेड़-पौधा रेशों से बना होता है।

मूल्यांकन



1 साइलुन नामक एक चीनी व्यक्ति को कागज का जन्मदाता माना जाता है ।

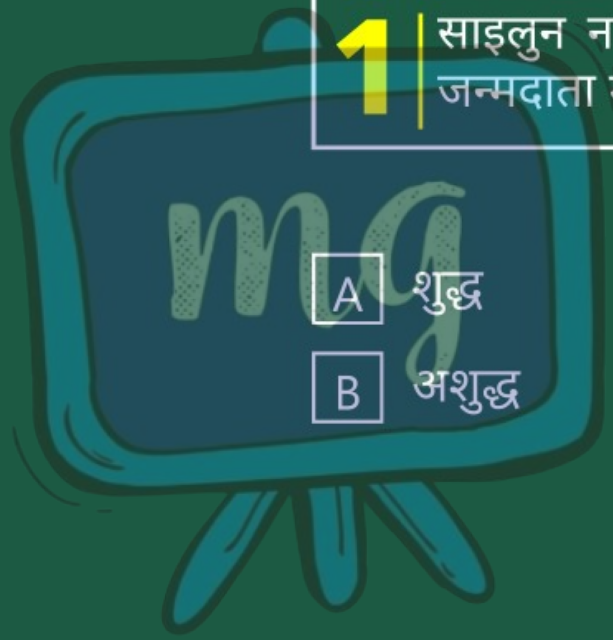

मूल्यांकन



2 | अंग्रेजी भाषा में कागज के लिए 'पेपिरस' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

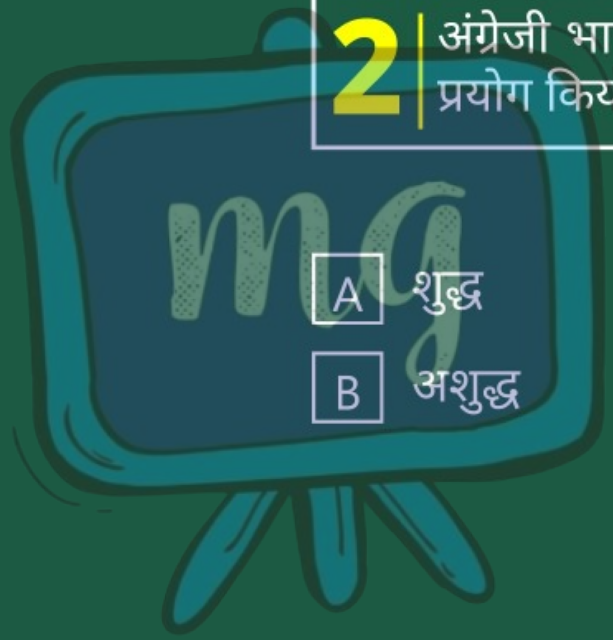

A शुद्ध

B अशुद्ध

मूल्यांकन



3 | शहतूत और बाँस से कागज बनाए जाते हैं ।

